IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अलका सरावगी के उपन्यासों में महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता और वर्ग संघर्ष

अर्चना
शोधार्थी

स्पर्श हिमालय यूनिवर्सिटी, देहरादून

डॉ. मनीषा अग्रवाल
सहायक - प्राध्यापक
स्पर्श हिमालय यूनिवर्सिटी, देहरादून

सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र का उदेश्य अलका सरावगी की नारी की सांवेदन के प्रति दृष्टि से है साथ में वर्तमान के साहित्य उपन्यास में नारी की परिस्थिति को जानना भी एक लक्ष्य है। उपन्यास मानव जीवन का समग्र चित्रण प्रस्तुत करता है, इसमें कई प्रकार के प्रसंग, कथाओं अथवा घटनाओं का चित्रण एवं वर्णन होता है। जिस प्रकार विद्यालय की एक कक्षा समाज के एक प्रतिरूप को तैयार करके समाज बनती है उसी प्रकार एक साहित्यकार अथवा साहित्य लेखक अपने द्वारा लिखे लेखों के द्वारा समाज में लोगों के जीवन की वास्तविकता उनके समक्ष प्रस्तुत करता है। वर्तमान हिंदी भाषा साहित्य ने मानव के जीवन को विविध रुपी बना दिया है, जिसमें उपन्यास, साहित्य एवं कवविाओां/कहानियों को एक महत्वपूर्ण कारक माना गया है। इस प्रकार की सभी विधायें गद्य का वर्तमान विक्षित रूप माना जा सकता है। वर्तमान गद्य प्रारूप में कथाओां, कविताओं, कथा–वस्तु, समाज का चित्रण, व्यक्ति के संवाद में कल्पना को जोड़कर समाज के समुख आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। जिसमें मनुष्य जीवन के यथार्थ के साथ–साथ जीवन मूल्यों का यथाथच चर्रण कराया जाता है। भारतवर्ष के साहित्यकारों ने अपने द्वारा निर्मित साहित्य में समाज, समाज में फैली कुरीतियाँ, व्यक्ति का जीवन, नारी का सममान एवां नारी के साथ होने वाले दुर्व्यवहार, दुर्भावना, असमानता, नारी की भावनाओां एवं संवेदनाओं को कथा के रूप में प्रस्तुत करने का का भी कार्य किया है। वर्तमान में कई साहित्यकार किसी न किसी रूप में नारी की सांवेदना, भावनाओ एवं नारी जीवन की समस्याओं का चित्रण अपने साहित्य में किया है। जिसमें २१ वी शताब्दी की महिला साहित्यकार अलका सरावगी का मित्वपूणच योगदान है। अलका सरावगी ने अपने कथा साहित्य

में वर्तमान समय में नारी के जीवन का यथाथच चित्रण कर नारी की पीड़ा, वेदना एवां सांवेदना का यथाथच चित्रण अपने साहित्य, मन की वेदना, नारी शोषण, जीवन की त्रासदी एवं पहाड़ी नारी की सांवेदना के माध्यम से स्त्री को समाज में शक्ति के साथ प्रस्तुत किया है। अलका सरावगी अपने साहित्य के माध्यम से नारी के दर्द को देशकाल की प्रमाणणकिा के साथ प्रस्तुत करने में सफल हुई हैं। अलका सरावगी के द्वारा रचित साहित्य समाज के समक्ष कई प्रकार के प्रश्नो को रखने का प्रयास करता है।

कीवर्डचस: अलका सरावगी, स्त्री जीवन, हिंदी कथा साहित्य, नारीवाद, सामाजिक स्थिति, अश्मिता।

उपसंहार

संवेदना किसी भी रचनाकार की आत्मा होती है—वह उसकी आंतरिक अनुभूति है, जो व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों, सामाजिक वातावरण, संघर्षों और मानसिक द्वंद्वों से जन्म लेती है। जब यह संवेदना लेखन में अभिव्यक्त होती है, तो वह पाठक के मन को गहराई से स्पर्श करती है। एक लेखक के लिए आवश्यक है कि वह अपने भीतर की अनुभूतियों को इस प्रकार अभिव्यक्त करे कि वे केवल निजी न रहकर सामूहिक चेतना का हिस्सा बन जाएँ। पाठक को तभी जुड़ाव महसूस होता है जब वे रचना में अपनी पीड़ा, आशा या जिजीविषा की झलक पाएँ। अलका सरावगी की रचनाएँ इसी प्रकार की संवेदनशीलता और आत्मीयता की मिसाल हैं। वे स्वयं एक मध्यवर्गीय नगरीय परिवार से आती हैं, इसीलिए उनके कथा–साहित्य में उसी वर्ग की अनुभूतियाँ स्वाभाविक रूप से परिलक्षित होती हैं। उन्होंने अपने लेखन में उस परिवेश की मनःस्थिति, संकट, जद्दोजहद और मानवीय रिश्तों की गहराइयों को अत्यंत मार्मिकता से उजागर किया है। पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों के बीच झूलता समाज, स्त्री की स्थिति, जातीय पहचान, आर्थिक विषमता, और बदलती पारिवारिक संरचनाएँ उनके लेखन के प्रमुख विषय हैं। सरावगी की विशेषता यह है कि वे गंभीर से गंभीर मुद्दों को भी अत्यंत सहज भाषा में इस तरह प्रस्तुत करती हैं कि पाठक उन बातों से खुद को जोड़ने लगता है। उनके पात्र ऐसे होते हैं जो हमारे आसपास ही रहते हैं, जिनका संघर्ष और भावनाएँ हमारी अपनी लगती हैं। उनकी कहानियों में संवेदना इतनी सजीव होती है कि पाठक को लगता है जैसे यह उसकी अपनी ही कहानी हो। यही उनके लेखन की शक्ति है। यह कहा जा सकता है कि अलका सरावगी का लेखन मानवीय संवेदनाओं का गहरा दस्तावेज है। वे अपनी कहानियों में केवल घटनाएँ नहीं कहतीं, बल्कि जीवन की गहराइयों को छूती हैं। अलका सरावगी हिंदी साहित्य की उन चंद कथाकारों में से एक हैं जिन्होंने मध्यमवर्गीय नारियों के अंतर्मन, संघर्ष और सामाजिक दबावों को अत्यंत संवेदनशीलता और यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यासों में महिला पात्र केवल किसी पुरुष की छाया बनकर नहीं उभरतीं, बल्कि वे अपने अस्तित्व, पीड़ा और आत्मसंघर्ष के साथ पाठकों के सामने एक जीवंत चरित्र के रूप में आती हैं।कलिकथा वाया बाईपास उपन्यास की नारी पात्र विमली इसी कड़ी की एक प्रतिनिधि है। वह एक ऐसी स्त्री है जो अपने सामाजिक और पारिवारिक दायरे में बंधी हुई है, जहां उसे मर्यादा, परंपरा और नैतिकता की सीमाओं में रहने के लिए विवश किया गया है। विमली का जीवन किसी बड़े विद्रोह की कहानी नहीं है, बल्कि वह उस अंदरूनी बेचैनी, चुप्पी और घुटन की कहानी है जिससे असंख्य स्त्रियाँ गुजरती हैं। वह कभी परिस्थितियों से समझौता करती है, तो कभी अपनी आत्मा की आवाज को दबाने का प्रयास करती है।उसके भीतर की पीड़ा, अभाव और आकांक्षाएँ उसे कई बार

झुंझलाहट और बौखलाहट की स्थिति तक ले जाती हैं, परंतु वह अपने दर्द को शब्द नहीं दे पाती। उसका मौन, उसकी विवशता को और भी मुखर बनाता है। विमली की यह चुप्पी दरअसल उस समाज पर एक करारा प्रहार है जो स्त्रियों को केवल सहने और समर्पित रहने की भूमिका में देखना चाहता है।

अलका सरावगी की यही विशेषता है कि वे विमली जैसी पात्रों के माध्यम से स्त्री मन की जटिलताओं, उसके सामाजिक दायित्वों और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच की खाई को बड़ी सूक्ष्मता से उजागर करती हैं। उनकी लेखनी स्त्री विमर्श को एक नई दृष्टि प्रदान करती है ,जिसमें स्त्री केवल शोषण की शिकार नहीं, बल्कि एक विचारशील, संवेदनशील और जुझारू व्यक्ति के रूप में सामने आती है।

उसे भी मर्यादा की जिन सीमाओं में रहने के लिए विवश किया जाता है वह अपनी तकलीफ को किसी से कहने में सक्षम नहीं है –"गांव की औरतें खुली जगहों में रहने के बाद यहां शहर में पुटन महसूस करती है साहब लोगों की औरतों की तरह उन्हें घूमने फिरने की आजादी थोड़े ही मिली हुई है। रामविलास किसी अंग्रेज दंपत्ति को एक साथ बग्गी या मोटरकार में जाते देखता है तो देखता ही रह जाता है। क्या कभी वह इस तरह केदार की मां को लेकर बाहर निकलने की सोच सकता है? पूरा समाज धू–धू कर उठेगा ।"1

अलका सरावगी ने अपने कथा साहित्य में भारतीय सभ्यता और संस्कृति की पारंपरिक सोच को उजागर किया है, जहाँ स्त्री की स्वतंत्रता सीमित रहती है। उनके साहित्य में स्त्री को एक स्वायत्त, स्वतंत्र इकाई के रूप में चित्रित नहीं किया गया, बल्कि उसे हमेशा किसी न किसी पुरुष आश्रित के रूप में प्रस्तुत किया गया है। बचपन में वह पिता की छाया में रहती है, युवावस्था में पति की आज्ञाकारिणी बन जाती है और वृद्धावस्था में पुत्र पर निर्भर हो जाती है। लेखिका ने समाज द्वारा स्त्री के लिए खींची गई सीमाओं और बंधनों को बहुत मार्मिक रूप में दर्शाया है।उनकी कहानियों में स्त्री पात्रों को अक्सर पारिवारिक भूमिकाओं – बेटी, पत्नी, बहन, बहू या माँ – के रूप में चित्रित किया गया है। इन भूमिकाओं में वह अपने कर्तव्यों का निर्वहन तो करती है, परन्तु अपनी इच्छाओं और स्वप्नों को कुर्बान करती हुई दिखती है। पुरुष वर्चस्व वाले समाज में वह निरंतर अन्याय और अत्याचार का शिकार होती है, किंतु फिर भी चुपचाप सब कुछ सहती रहती है। अलका सरावगी ने अपने लेखन के माध्यम से इस पितृसत्तात्मक व्यवस्था की आलोचना की है और स्त्री की दयनीय स्थिति को उजागर किया है, जिससे पाठकों को सोचने पर मजबूर किया जा सके कि क्या यही स्त्री का वास्तविक स्थान होना चाहिए। अलका सरावगी के शेष कादंबरी उपन्यास में चित्रित नारी पात्रों की विविध मानसिकताओं और सामाजिक दृष्टिकोणों को दर्शाता है। उपन्यास की विभिन्न महिला पात्रोंकृजैसे रूचि दी, सविता, कादंबरी, सायरा, कम्मो, लीलादाई, शीला, आभा जैन, शकुंतला, माया बॉस, अर्पणा कल्याणी, अरुंधति और निवेदिताकृमें परंपरा और आधुनिकता दोनों की झलक मिलती है। कुछ पात्र पारंपरिक जीवन मूल्यों को अपनाए हुए हैं, जबकि अन्य आधुनिक विचारधारा और स्वतंत्र सोच का प्रतिनिधित्व करती हैं। हालांकि, यह भी स्पष्ट होता है कि अधिकांश महिलाएं अभी भी सामंती सोच और सामाजिक बंधनों से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाई हैं। उपन्यास यह भी उजागर करता है कि जब दांपत्य जीवन में सुरक्षा और आत्मसंतोष की बजाय निरंतर तनाव और दमन का वातावरण हो, तब उस रिश्ते से बाहर निकलना ही एक महिला के लिए उचित और आत्मसम्मानजनक मार्ग है। अलका सरावगी इस माध्यम से यह संदेश देती हैं कि महिलाओं को केवल परंपरा और कर्तव्य के नाम पर रिश्तों में बंधे रहना आवश्यक नहीं है; बल्कि उन्हें अपनी स्वतंत्रता, आत्मसम्मान और मानसिक शांति को प्राथमिकता देनी चाहिए। अलका सरावगी जी का उपन्याश उस सामाजिक प्रवृत्ति को दर्शाता है, जहाँ लोग अब पारंपरिक विवाह बंधन में बंधे रहने के बजाय अपने व्यक्तिगत सुख,

मानसिक शांति और आत्मसम्मान को प्राथमिकता देने लगे हैं। जब दांपत्य जीवन में निरंतर कलह, असम्मान, असमानता या भावनात्मक दूरी उत्पन्न हो जाती है, तो विवाह एक बोझ बन जाता है। ऐसे में तलाक एक साहसिक लेकिन जरूरी कदम बन जाता है, जो व्यक्ति को एक नया अवसर देता है। स्वतंत्र जीवन जीने का, अपने मन के अनुसार फैसले लेने का, और एक सकारात्मक मानसिक अवस्था में आगे बढ़ने का। यह जरूरी नहीं कि हर शादी सफल हो, और ना ही यह जरूरी है कि असफल विवाह को जबरन निभाया जाए। तलाक अब केवल एक सामाजिक कलंक नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और मानसिक शांति की दिशा में उठाया गया एक जागरूक निर्णय माना जाने लगा है। अतः जब दांपत्य जीवन में कोई समाधान नहीं बचता, तो तलाक लेकर स्वतंत्र रहना कहीं अधिक हितकर होता है। "फराह दिन रात गुमसुम रहने लगी थी जैसे–जैसे निराशा वढ़ती गई, अपने माता–पिता की तरह ही वह भी सोचने लगी थी कि तलाक ही इस स्थिति से निकलने का एकमात्र रास्ता है।"2

शेष कादंबरी उपन्यास में लेखिका ने आधुनिकता की चकाचौंध में भी महिलाओं के जीवन में गहराई से समाए अंधविश्वासों को बड़ी सूक्ष्मता से चित्रित किया है। उपन्यास की अधिकांश नारी पात्र इस वैज्ञानिक युग में भी पारंपरिक मान्यताओं और अंधविश्वासों की जकड़न से मुक्त नहीं हो पातीं। वे व्रत–उपवास, नग वाली अंगूठियाँ पहनना, जादू–टोना, शगुन–अपशगुन, शुभ मुहूर्त, ताबीज, भूत–प्रेत, पाय–पुल जैसी धारणाओं को सत्य मानकर जीवन के निर्णय लेती दिखाई देती हैं। इन सभी आस्थाओं का मूल डर, असुरक्षा और सामाजिक शर्तों में निहित है, जिसे पीढ़ी दर पीढ़ी महिलाओं के मन में बैठाया गया है। लेखिका ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि भले ही समाज आधुनिक हो गया हो, शिक्षा और प्रौद्योगिकी ने विकास कर लिया हो, लेकिन नारी मन आज भी परंपरा और विश्वासों के उस ताने–बाने में उलझा हुआ है, जहां तर्क से अधिक विश्वास की भूमिका होती है। लेखिका ने इस बात को बड़ी संवेदनशीलता से उकेरा है कि किस प्रकार ये अंधविश्वास महिलाएं अपने भीतर ढोती हैं, और यह उनके आत्मविश्वास, निर्णय–क्षमता व स्वतंत्र सोच को प्रभावित करता है। उपन्यास इस द्वंद्व को उजागर करता है कि बाह्य रूप से आधुनिक दिखने वाली स्त्रियां भीतर से आज भी सामाजिक मान्यताओं की बेड़ियों में कैद हैं। लेखिका ने शेष कादंबरी उपन्यास में स्पष्ट किया है। कि "आदमी एक बार अपने को इस धोखे में पढ़ने दे तो वह सारा जीवन इसी तरह पड़ा रहता है।"3

अलका सरावगी हिंदी साहित्य की एक प्रमुख कथाकार हैं, जिन्होंने 'आपकी हंसी' नामक कहानी के माध्यम से अपनी लेखन यात्रा का आरंभ किया था। उनकी कहानियाँ और उपन्यास मानवीय संवेदनाओं की गहराई को छूते हैं और एक संवेदनात्मक अनुभव प्रदान करते हैं। उनका साहित्य विशेष रूप से मध्यमवर्गीय जीवन की जटिलताओं और स्त्री की मनोस्थितियों को अत्यंत सजीवता से प्रस्तुत करता है। अलका सरावगी ने भारतीय समाज में स्त्री की भूमिका, उसकी सीमाएँ और उसकी आकांक्षाओं को जिस सूक्ष्मता से उकेरा है, वह उन्हें समकालीन कथाकारों में विशिष्ट बनाता है।

उनके उपन्यास 'कलिकथा वाया बाईपास' में भी यही विशेषता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस उपन्यास का नायक किशोर एक साधारण मध्यमवर्गीय परिवेश का प्रतिनिधित्व करता है। जब उसकी विधवा भाभी किसी उत्सव में भाग लेने के लिए रंग–बिरंगी नई साड़ी पहन लेती है, तो किशोर की प्रतिक्रिया बहुत ही पारंपरिक और सामाजिक दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करती है। वह क्रोधित हो जाता है और उसे डाँटने लगता है, क्योंकि वह भाभी की इस स्वतंत्रता को अपनी सामाजिक मर्यादा और परंपरा के विरुद्ध समझता है। यह दृश्य दर्शाता है कि किस प्रकार समाज स्त्री को परंपरा और सीमाओं में बाँध कर देखता है, और जब वह उनसे ज़रा भी हटती है, तो विरोध होता है। किशोर हबू का चेहरा लाल पीला हो जाता है और उसे डांटते हुए कहता है कि "तुम्हारा दिमाग अब एक दम ही खराब हो गया है भाभी? उम्र बढ़ने

के साथ–साथ आदमी की अक्त भी बढ़ती है पर मुझे लगता है कि यूपी वालों की अकल कम होने लगती है यह क्या इतने चटक मटक रंग की साड़ी पहन रखी है क्या कहेंगे लोग यह देखकर? कुछ तो मर्यादा रखी होती समाज में"4

ब्रेक के बाद उपन्यास में लेखिका ने विशेष रूप से भारत में बढ़ती हुई रिश्वतखोरी, महंगाई, भ्रष्टाचार और बेरोजगारी की समस्याओं को केंद्र में रखा है। ये समस्याएँ न केवल देश की अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर रही हैं, बल्कि युवा वर्ग के सपनों और भविष्य पर भी गहरा असर डाल रही हैं। इन परिस्थितियों के चलते भारत का युवा आत्मनिर्भर बनने की बजाय रोजगार की तलाश में विदेशों का रुख करने पर मजबूर हो गया है, जहाँ उसे अक्सर अपनी योग्यता से कमतर काम जैसे मजदूरी करनी पड़ती है। यह स्थिति देश के लिए चिंता का विषय है, क्योंकि इससे ब्रेन ड्रेन की समस्या और भी अधिक गहरी होती जा रही है। उपन्यास का एक पात्र गुरुचरण इस स्थिति को बड़े ही दर्दभरे स्वर में व्यक्त करता है। वह कहता है कि देश में योग्य होते हुए भी यदि युवाओं को काम न मिले और उन्हें पेट पालने के लिए परदेस में अपमानजनक श्रम करना पड़े, तो यह व्यवस्था पर एक कड़ा सवाल है। पात्र गुरुचरण कहता है कि "हां अमेरिका के लोगों के लिए बच्चों का सस्ता होमवर्क सस्ती मजदूरी और अब सस्ती प्रार्थना करने के लिए भी इंडियन हाजिर है" अलका सरावगी के उपन्यास एक ब्रेक के बाद में कॉर्पोरेट दुनिया की जटिलताओं और मानवीय संबंधों की विसंगतियों को गहराई से प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास में उन्होंने यह दिखाने की कोशिश की है कि कैसे आधुनिक कार्यस्थलों में प्रतिस्पर्धा इतनी तीव्र हो गई है कि व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए दूसरों को धोखा देने, छल करने या बेवकूफ बनाने से भी नहीं चूकता। हर कोई चाहता है कि उसकी सोच, उसका काम और उसका दृष्टिकोण सबसे श्रेष्ठ साबित हो, चाहे इसके लिए उसे दूसरों की भावनाओं को कुचलना ही क्यों न पड़े। यह उपन्यास न केवल कॉर्पोरेट जीवन की भाग–दौड़ को उजागर करता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि कैसे इंसान धीरे–धीरे संवेदनहीन होता जा रहा है और संबंधों की गरिमा को भुलाकर केवल अपने हितों को प्राथमिकता दे रहा है। लेखक यह भी दर्शाते हैं कि इस तरह की मानसिकता न केवल कार्यस्थल को विषाक्त बनाती है, बल्कि व्यक्ति के निजी जीवन में भी असंतुलन और तनाव को जन्म देती है। "एडवरटाइजिंग की दुनिया में तो खासकर हर तीसरा आदमी ऐसा ही मूर्ख होता है उसे भ्रम होता है। कि वह एक ऐसा नायाब हीरा है जिसका जोड़ दुनिया में दूसरा नहीं।"6

अलका सरावगी के कथा साहित्य में स्त्री की स्थिति और उसकी सामाजिक सीमाओं को दर्शाता है। अलका सरावगी ने भारतीय समाज की उस पारंपरिक मानसिकता को अपने साहित्य में उकेरा है जिसमें स्त्री को स्वतंत्र और स्वच्छंद जीवन जीने की अनुमति नहीं दी जाती। उनके लेखन में स्त्री का जीवन सदैव किसी पुरुष संरक्षक की छाया में बीतता है। बाल्यावस्था में पिता, युवावस्था में पति और वृद्धावस्था में पुत्र। इसका तात्पर्य यह है कि स्त्री को कभी भी पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर नहीं माना गया, बल्कि वह हमेशा पुरुष पर निर्भर रही है। कतिकथा वाया बाईपास उपन्यास में लेखक ने ग्रामीण जीवन, पारिवारिक संबंधों और सामाजिक बदलावों को अत्यंत संवेदनशीलता से चित्रित किया है। बेटी की जिज्ञासा दरअसल एक नई पीढ़ी की उस खोज को दर्शाती है, जो अपने पूर्वजों के अनुभवों, उनके संघर्षों और मूल्यों को समझने की कोशिश कर रही है।ताई का उत्तर मात्र एक कहानी नहीं होता, बल्कि वह उस सांस्कृतिक विरासत की झलक होती है, जिसमें त्याग, प्रेम, पीड़ा और सामूहिकता जैसे तत्व समाए होते हैं। इस दृश्य के माध्यम से लेखक यह संकेत करते हैं कि पारिवारिक संवाद और अनुभवों की साझेदारी से न केवल संबंध मजबूत होते हैं, बल्कि युवा पीढ़ी को अपने अस्तित्व और पहचान की गहराई भी समझ में आती है। उपन्यास के नायक किशोर की बेटी जब अपनी ताई से प्रश्न करती है, तो वह केवल जिज्ञासा प्रकट नहीं कर रही होती, बल्कि उस संवाद में पीढ़ियों के बीच के अंतर, अनुभवों

और सोच की टकराहट भी झलकती है। "बड़ी मां तुम बताओ कि पापा इस तरह क्यों सोचते हैं लड़कियों के बारे में, हम क्यों नहीं खेल सकते बगल के मकान की लड़कियों से? हम क्यों नहीं खड़े हो सकते बरामदे में? हम क्यों नहीं जा सकते अपनी सहेलियों के घर हम क्यों कैद हैं पिंजरे में बंद चिड़ियों की तरह? तुम क्यों कैद हो बड़ी मां? तुमने क्या पाया ऐसा जीवन जीकर किसके लिए जीवन जिया तुमने ऐसा? तुम क्यों सहती हो बात बात पर पापा की मर्जी?"7

अलका सरावगी एक ऐसी लेखिका हैं जो आधुनिक विश्व की जटिलताओं, नवीन सोच और समसामयिक मुद्दों की गहरी समझ रखती हैं। वे अपने लेखन में न केवल वर्तमान समाज की चुनौतियों, विचारधाराओं और बदलते मूल्यों को अभिव्यक्त करती हैं, बल्कि साथ ही साथ भारतीय संस्कृति, परंपराओं और प्राचीन मिथकों का भी अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करती हैं। उनके उपन्यास "कोई बात नहीं" इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ वे एक ओर आधुनिकता और वैश्वीकरण से उत्पन्न मानवीय संघर्षों को उकेरती हैं, तो दूसरी ओर परंपरागत मान्यताओं और सामाजिक ढांचे की पड़ताल भी करती हैं। यह उपन्यास यह प्रमाणित करता है कि लेखिका न केवल वर्तमान की पैनी दृष्टि से विवेचना कर सकती हैं, बल्कि अतीत की गहराइयों में जाकर भी उसे समझने और प्रस्तुत करने की सामर्थ्य रखती हैं। इस तरह, अलका सरावगी की लेखनी एक पुल का कार्य करती है जो अतीत और वर्तमान, परंपरा और आधुनिकता के बीच एक संतुलित संवाद स्थापित करती है। अलका सरावगी भारतीय परंपरा, प्राचीन कथाओं, मिथकों और सांस्कृतिक मूल्यों का भी गहरा ज्ञान रखती हैं। वे इतिहास और सांस्कृतिक स्मृतियों को केवल अतीत के दस्तावेज़ के रूप में नहीं देखतीं, बल्कि उन्हें वर्तमान से जोड़कर नए संदर्भों में पुनः व्याख्यायित करती हैं। उनके उपन्यास 'कोई बात नहीं' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। "तुमने राजा भोज के दरबार में रहने वाले ज्योतिषी घाग के बारे में मालूम है कि वह इतना चतुर चालाक था कि दरबार के सारे पंडित उससे जलते थे। एक बार ऐसा भयंकर अकाल पड़ा कि जनता त्राहि त्राहि कर उठी। पंडितों को राजा ने मौका दिया और पूछा कि वृष्टि कब होगी। घाघ के रहते कोई बताने वाला ना था कि वृष्टि कव होगी। राजा को गुस्सा आया कि अगर ठीक ठीक नहीं बताया तो फांसी पर लटका दिए जाओगी। राजा ने एलान करवा दिया।"8

लेखिका का मुख्य उद्देश्य अपने साहित्य के माध्यम से समाज के आम जनमानस के भीतर मानवता, करुणा और संवेदना की भावना को जागृत करना है। यह उपन्यास एक विकलांग बच्चे शशांक और उसकी मां के संघर्षमय जीवन की मर्मस्पर्शी दास्तान प्रस्तुत करता है। शशांक शारीरिक रूप से भले ही कमजोर हो, लेकिन उसकी मानसिक शक्ति, आत्मविश्वास और जिजीविषा अत्यंत प्रेरणादायक है।इस उपन्यास की कथा शशांक के इर्द–गिर्द घूमती है, जो अनेक सामाजिक बाधाओं और मानसिक प्रताड़नाओं के बावजूद हार नहीं मानता। उसकी मां का त्याग, समर्पण और स्नेह इस कहानी को और भी भावुक बना देता है। लेखिका इस कथा के माध्यम से समाज को यह संदेश देना चाहती हैं कि विकलांगता किसी की कमजोरी नहीं होती, बल्कि समाज की सोच ही असल विकलांगता है।शशांक जैसे बच्चों को दया या तिरस्कार की दृष्टि से नहीं, बल्कि समानता और सम्मान के साथ देखना चाहिए। उनके साथ सामान्य बच्चों की तरह व्यवहार करना चाहिए ताकि उन्हें आत्मगौरव और आत्मसम्मान का अनुभव हो। ऐसा करने से ही वे अपने जीवन में आगे बढ़ने का साहस पा सकते हैं और समाज की मुख्यधारा में शामिल हो सकते हैं। यह उपन्यास न केवल भावनाओं को झकझोरता है, बल्कि सोच को भी एक नई दिशा देने का कार्य करता है। जैसे आपकी हँसी में संसार के सभी रिश्ते की नींव आर्थिक संपन्नता पर आधारित है। यह पंक्ति यह दर्शाती है कि इस कहानी में रिश्तों की सच्चाई को उजागर किया गया है। इसमें यह बताया गया है कि आधुनिक समाज में अधिकतर रिश्ते केवल भावनाओं पर नहीं, बल्कि आर्थिक स्थिति पर टिके होते हैं। कहानी में यह दिखाया गया है कि जब तक धन है, तब तक रिश्ते मजबूत प्रतीत होते

हैं, लेकिन जैसे ही आर्थिक स्थिति डगमगाती है, वैसे ही रिश्तों की असलियत सामने आने लगती है।रह गुजर ना होती कहानी में संयुक्त परिवार की समस्या उजागर की गई है इस कहानी में पारिवारिक ढांचे की जटिलताओं को दिखाया गया है। खासकर संयुक्त परिवार में रह रहे विभिन्न सदस्यों के बीच आपसी मतभेद, अपेक्षाएं, पीढ़ियों के अंतर और आत्मसम्मान जैसी समस्याओं को केंद्र में रखा गया है। यह कहानी यह सवाल उठाती है कि क्या आज के समय में संयुक्त परिवार जैसी संस्था व्यवहारिक रूप से सफल हो सकती है?बहुत दूर है आसमान में लड़कियों की सुरक्षा की चिंता की गई है इस कहानी में नारी सुरक्षा को मुख्य विषय बनाया गया है। इसमें दिखाया गया है कि एक लड़की के लिए आसमान यानी स्वतंत्रता और समान अवसर पाना अभी भी एक सपना है। समाज में व्याप्त लैंगिक असमानता, डर और असुरक्षा की भावना को कहानी ने गहराई से छुआ है। यह कहानी उन संघर्षों को उजागर करती है जो एक लड़की को अपने सपनों को पाने की राह में झेलने पड़ते हैं।समग्र रूप से, इन तीनों कहानियों के माध्यम से समाज के तीन अलग–अलग लेकिन गंभीर मुद्दों की आर्थिकता में डूबे रिश्ते, पारिवारिक संरचना की विफलता, और महिलाओं की असुरक्षा को प्रभावशाली ढंग से दर्शाया गया है।

"खिजाब" कहानी प्रेम और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच द्वंद्व को दर्शाती है। यह कहानी दर्शाती है कि व्यक्ति कैसे प्रेम जैसे गहरे संबंध को भी त्याग कर अपनी स्वतंत्रता और आत्मसम्मान के लिए निर्णय ले सकता है। यह आज के समाज में विशेष रूप से महिलाओं के लिए एक प्रेरक संदेश है, जहाँ वे अपने निर्णय खुद ले सकें और समाज की बेड़ियों को तोड़कर स्वतंत्र जीवन जी सकें। "हर शै बदलती है" कहानी एक गहन मानसिक यात्रा है, जो मनुष्य के अंदर पल रही निराशा, हीन भावना, क्रोध, और प्रतिशोध जैसी नकारात्मक भावनाओं को उजागर करती है। यह कहानी इस बात को रेखांकित करती है कि जब व्यक्ति इन भावनाओं के अधीन हो जाता है, तो वह गलत निर्णय लेकर अपने और दूसरों के जीवन को प्रभावित कर सकता है। इसलिए, इस कहानी का उद्देश्य लोगों के मन में आस्था, सकारात्मकता और आत्मनियंत्रण की भावना को जगाना है।"बीज" कहानी रोग और संकट की स्थिति में मानसिक दृढ़ता, आत्मबल और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को सामने लाती है। यह दिखाया गया है कि एक बीमार व्यक्ति भी यदि मानसिक रूप से मजबूत हो, तो वह कठिन से कठिन परिस्थिति का सामना कर सकता है। यह कहानी आशा और जिजीविषा का प्रतीक बनकर पाठकों को प्रेरणा देती है।

"टिफिन" कहानी किशोरावस्था की जटिलताओं और उस उम्र के मनोवैज्ञानिक बदलावों को दर्शाती है। इस उम्र में बच्चे न सिर्फ शारीरिक, बल्कि भावनात्मक और मानसिक बदलावों से भी गुजरते हैं। यह कहानी उस नाजुक दौर की उलझनों, गलतफहमियों और पहचान की तलाश को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करती है। "एक पेड़ की मौत"एक संवेदनशील कहानी है जो पर्यावरण और प्रकृति के प्रति हमारी उदासीनता को उजागर करती है। यह एक प्रतीकात्मक कथा है जो यह दर्शाती है कि कैसे मानव स्वार्थ के कारण पेड़ जैसे जीवनदायी तत्वों की हत्या हो रही है। इस कहानी के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का गहन संदेश दिया गया है, और यह चेतावनी भी कि यदि हम प्रकृति का सम्मान नहीं करेंगे, तो हमारा अस्तित्व भी संकट में पड़ सकता है। अलका सरावगी की कहानियाँ मनोवैज्ञानिक, सामाजिक यथार्थ परक, प्रतीकात्मक और उद्देश्यपरक होती हैं। वे केवल एक कथा नहीं रचतीं, बल्कि समाज के विविध पहलुओं को उजागर करती हैं। चाहे वह व्यक्ति की भीतरी मानसिकता हो या समाज में व्याप्त विभिन्न विसंगतियाँ। उनकी रचनाएँ समाज के हर कोने से जुड़े विभिन्न वर्गों और व्यक्तित्वों की सोच, मानसिक तनाव, संघर्ष और आकांक्षाओं को गहराई से अभिव्यक्त करती हैं।अलका सरावगी के कथा साहित्य में संवाद शैली का विशेष महत्व है। संवादों के माध्यम से उन्होंने न केवल

पात्रों के भावों को सजीव किया है, बल्कि सामाजिक प्रश्नों और मानवीय मूल्यों को भी मुखर रूप दिया है। उन्होंने अपने लेखन में स्त्री की पीड़ा, संघर्ष, दमन और उसकी अंतर्मन की आवाज़ को प्रमुखता से स्थान दिया है।उनका मानना है कि नारी समाज का आधा हिस्सा है, और जब तक उसके यथार्थ को सामने नहीं लाया जाएगा, तब तक समाज का यथार्थ अधूरा रहेगा। उनकी कहानियाँ नारी जीवन की गहराइयों में उतरती हैं और उसकी चुप्पियों को शब्द देती हैं। अलका सरावगी का साहित्य नारी चेतना को नई दिशा देता है और उसे प्रेरणा, आत्मबल और स्वर प्रदान करता है। इसलिए, यदि स्त्री को किसी प्रेरणा स्रोत की आवश्यकता हो, तो निःसंदेह वह अलका सरावगी जैसे साहित्यकारों के लेखन में मिल सकती है।

सन्दर्भ सूची

1- सरावगी, अलका। कललकथा वाया बाईपास। राजकमल प्रकाशन, 1998।

2- सरावगी, अलका। एक थी नारी। राजकमल प्रकाशन, 2005।

3- सरावगी, अलका। शेष कादांबरी। राजकमल प्रकाशन, 2010।

4- लमश्रा, ववद्या। हिंदी साहित्य में नारी ववमशच। वाणी प्रकाशन, 2015।

5- शमाच, सीमा। आधुतनक हिंदी कथा साहित्य में स्त्री स्त्वर। साहित्य अकादमी, 2018।

6- भारि भारी , संस्करण 1912ई., मैथिलीशरण गुप्त.

7- प्रतियोगी साहित्य लसरीज (हिन्दी), पृष्ठ 250] डॉ. अशोक तिवारी.

8- हिन्दी सहित्य का इतिहास , पृष्ठ 724] समपादक डॉ. नागेंद्र. 4- कलल कथारू वाया बाइपास, पृटि 61] अलका सरावगी.

9- कललकथारू वाया बाइपास, पृटि 201] अलका सरावगी.

10- कललकथारू वाया बाइपास, पृटि 158] अलका सरावगी.

11- कललकथारू वाया बाइपास, पृटि 158] अलका सरावगी.

12- कललकथारू वाया बाइपास, पृटि 215] अलका सरावगी.

13- एक ब्रेक के बाद, पृटि 75] अलका सरावगी

14- एक ब्रेक के बाद, पृटि 168] अलका सरावगी

15- कोई बाि निीां, पृटि 36] अलका सरावगी